

अस्माकं देशः भारतवर्षमिति कथ्यते। अस्य महिमा सर्वत्र गीयते।  
पाठेऽस्मिन् विष्णुपुराणान् भागवतपुराणान् प्रथमं द्वितीयं च क्रमशः  
पद्यं गृहीतमस्ति। अवशिष्टानि पद्यान्पद्यक्रमेण निर्मात्र प्रस्तावितानि  
भारते प्रति अस्मिन्समाकं कर्तव्यरूपेण वर्तते।

अर्थ -> हमारा देश भारतवर्ष कहलाता है। इसकी  
समस्त महिमा सभी जगह गायी जाती है। इस पाठ में  
विष्णुपुराण तथा भागवतपुराण से प्रथम और द्वितीय  
पद्य क्रमशः लिखा गया है। शेष (अवशिष्ट) अष्टादश  
के द्वारा निर्मात्र कर प्रस्तावित है। भारत के प्रति अस्मिन्  
हमारा कर्तव्य रूप है।

1.) गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यकारु ते भारतभूमिभागे  
वर्णापवर्गारूपदमार्गभिरे भवन्ति भूयः धुरुषाश्च सुरत्वात्।

अर्थ -> भारतमहिमा का गुणगान करते हुए देवता कहते हैं।  
ही धन्य हैं वो लोग जो इन स्वर्ग और मोक्ष की  
प्रदान करने वाली क्षरती पर केवल को प्राप्त कर  
पुनः जन्म क्षरण करते हैं।

2.) अहो भूमीषां किमकारि शोभनं प्रसन्नो एषां स्विदुत  
स्वयं हरिः।  
अर्जुन लब्धो मृत्युं भारताजिरे मुकुन्दस्तेषां पशितं  
स्पृहा हि नः॥

अर्थ -> भारतमहिमा का गुणगान करते हुए देवता कहते हैं।  
की अहो कितना सुंदर बनाया गया है। अहो के  
लोग भगवान् विष्णु की उपासना करने के लिए  
जन्म लेते हैं। या भगवान् विष्णु भी अहो के  
लोगों पर प्रसन्न होकर अवतार लेते हैं। सदेवता  
लोग भी इस क्षरती पर जन्म लेना चाहते हैं।

3.) इमां निर्मलां वत्सलां मातृभूमिः प्रसिद्धं स्वरा भारतं  
वर्धयेत्।

विभिन्ना जना धर्मजात्रिप्रभेदै - रिहं कवभावं वहन्ती  
वसन्ति॥

अर्थ: १) यह प्रसिद्ध भारतभूमि पवित्र और ममतामयी है।  
 जहाँ इनेक जाति और धर्म के लोग अपने जाति  
 और धर्म के भेदों को भूल कर एकत्व की भावना  
 से रहते हैं।

4) विशालभारतमयी धरा भारतीय सदा सेविता सागरं  
 समलया।।

वनैः पर्वतैर्निहरैर्मध्यमति चरन्नीहिरैषा सुशुभा  
 न्यापगोभिः।।

अर्थ: हमारे भारत की विशाल मातृभूमि सौन्दर्यशाली और  
 भव्य ऐश्वर्यवाली है। जो आगरी से घिरी हुई  
 समशीतल है। तथा वनों, पर्वतों और झरनों, नदियों  
 से द्वारा सेवित है।

3) अगदुर्गोत्तमं भारतं शोभनिधं सदारुमाभिरुततथा पूजनीयम्  
 भवेद् देशभक्तिः स्वयंघां जनानां परादररूपा  
 सदावर्जनीया।।

अर्थ: संसार का यह उत्तम भारतदेश शोभनिध है। तथा हम  
 लोगों के द्वारा पूजा करने योग्य है योग्य है  
 तथा सभी जो भव्यभाकृति एवं रूप देशभक्ति करने  
 चाहें।